National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2016; 1(5): 27-28
© 2016 NJHSR
www.sanskritarticle.com
Received: 27-03-2016
Accepted: 28-03-2016

बन्दना ठाकुर,
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू-180006

Correspondence:
बन्दना ठाकुर,
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू-180006

रमेश बख्शी के नाटक "पिनकुशन" में व्यक्त व्यवस्था का आतंक बनाम जनक्रांति

बन्दना ठाकुर

पूंजीपति वर्ग हमारे समाज का ऐसा वर्ग है जो आर्थिक तौर पर सम्पन्न और शक्तिशाली होने के कारण समाज की शासन व्यवस्था की लगाम अपने हाथ में रखता है। अपनी शक्ति को बनाए रखने के लिए यह वर्ग अपनी अत्याचारी प्रवृत्ति द्वारा शोषण कर आम जनता पर दबदबा जमाये रखता है। इसके साथ ही शासन व्यवस्था तथा सरकार पर इन पूंजीपतियों का प्रभुत्व भी सदैव रहा है। वर्तमान युग में ये पूंजीपति अवसरवादिता, बेईमानी, स्वार्थ तथा भ्रष्टता की सारी हदें पार कर चुके हैं। अपनी शक्ति तथा प्रभुत्व बनाए रखने के लिए पैसा लगाकर चुनाव करवाते हैं और बाद में चुनी हुई सरकार इन पूंजीपतियों को संरक्षण प्रदान करती है। रमेश बख्शी के नाटक 'पिनकुशन' में डैडी ऐसे ही पूंजीपति वर्ग का प्रतीक है। अलपिन के माध्यम से डैडी सरकारी तन्त्र पर दबदबा बनाए रखने के लिए इन्हें सोने के केस में जड़वाकर राजनेताओं को भेजता है ताकि राजनेता अवसर आने पर इनके अनुचित कार्यों को कर सकें। डैडी बिटिया से कहता है -"पता है बिटिया मैंने उन्नीस सौ सैंतालिस में सभी मंत्रियों को सारे अलपिन सोने के केस में मढ़वाकर भेजी थी। आज भी हर चुनाव के बाद सारे मंत्रियों को सोने चढ़ी पिनों का पैकेट भेंट करता हूँ। तुम किसी भी पार्टी के किसी भी घर में चली जाओ अगर उसका सियासत से दूरदराज का भी कोई ताल्लुक है तो वहाँ मेरी अलपिन का एक पैकेट जरूर निकलेगा।"[1]

आज की शासन व्यवस्था में पूंजीवाद का ज़हर धीरे-धीरे घुलता जा रहा है। रिश्वत, भाई-भतीजावाद, पक्षपात, सिफारिश नियुक्तियों से लेकर शासन व्यवस्था के छोटे से छोटे कार्य या योजना को पूंजीपति लोग अवश्य प्रभावित करते हैं। इतना ही नहीं ये लोग व्यवस्था पर भी अपना आधिपत्य जमा लेते हैं और गरीब जनता का शोषण करते हैं। घर तथा कार्यालय में कार्य करने वाले निम्नवर्गीय कर्मचारियों के वेतन में कटौती कर तथा उनकी उचित मांगों को पूरा न कर उन्हें प्रताड़ित करते हैं। 'पिनकुशन' का डैडी ऐसा ही पूंजीपति व्यक्ति है जो अपना दबदबा बनाये रखने के लिए देश के मंत्रियों को तो अलपिन के पैकेट सोने के केस में रखकर भेजता है किन्तु अपने कर्मचारियों को पूरा वेतन भी नहीं देता। कर्मचारी तानाशाही व्यवस्था को न सहते हुए बगावत पर उतर आते हैं। शोफर बिटिया से कहता है -"आप लोगों में तानाशाही है। अपने मातहतों को आप पैर की जूती समझते हैं।

बिटिया: तो तुम क्या चाहते हो?
शोफर : काम के घंटे कम हों। हर हफ्ते छुट्टी मिले। साल में एक महीने की छुट्टी पगार के साथ में दें। भत्ता बढ़ाया जाए। ओवर टाइम का बंदोबस्त हो। प्राविडेंट फंड का इंतज़ाम किया जाये। नौकरी खत्म होने पर ग्रेच्यूटी मिले। बोनस फिक्स किया जाए। वर्दी धोने के लिए दो की जगह तीन साबुन ...
डैडी : क्या तुम चुप कर सकते हो?
शोफर : और हमें बोलने का अधिकार दिया जाए ...।"[2]

इस प्रकार श्रमिक वर्ग शोषकीय हथकण्डों को चुपचाप सहन करने की अपेक्षा अब अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। किन्तु पूंजीपति शोषक वर्ग उन्हें अधिकार देने से कतराता है। वह स्वार्थ में यह भूल जाता है कि वास्तविक धन कमाने वाला कौन है और उसे कितना हिस्सा दिया जाना चाहिए। इन कर्मचारियों से काम अधिक लिया जाता है किन्तु इन्हें उतना वेतन नहीं दिया जाता इसलिए ये लोग अपना हक माँगने लगे हैं। जैसे-जैसे पूंजीपतियों का अत्याचार बढ़ता जाता है वैसे-वैसे श्रमिकों के भीतर असन्तोष भी बढ़ता जाता है। सभी कर्मचारी मिलकर संकल्प करते हैं -" जब तक इस बुर्जुआ पूंजीवादी तानाशाही कंपनी का पटरा नहीं बैठा देते तब तक चुप नहीं बैठेंगे। हमारी माँगे जब तक पूरी नहीं हो जाएंगी, माली बगीचे में पानी नहीं देगा। महाराज करेले नहीं पकायेगा और यह आपका कामरेड गाड़ी का गियर नहीं बदलेगा। धोबिन लोहा गरम नहीं करेगी, जब तक लोहे से लोहा नहीं टकरा जाये। आया कपड़े नहीं निचोड़ेगी जब तक कंपनी की बेईमानी को ही हम न निचोड़ दें।"[3]

सारे कर्मचारी बगावत पर उतर आते हैं और संगठित होकर पूंजीपति डैडी के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। लेकिन सत्ताधारी पूंजीपति हमेशा विद्रोह को दबाने का प्रयास करता है। वह नहीं चाहता कि मामूली व्यक्ति अपना सिर उठाकर उसके प्रति बगावत करे। वह विद्रोह का सिर कुचल देना चाहता है।

'पिनकुशन' नाटक का पूंजीपति डैडी ऐसा ही शोषक तथा अत्याचारी व्यक्ति है जो अपने कर्मचारियों द्वारा किए गए विद्रोह को कुचल देना चाहता है। डैडी अपनी बिटिया से कहता है -"मेरा हमेशा से सिद्धान्त यह रहा है बिटिया कि विरोध जब सिर उठाए तो उसे उसी समय कुचल देना चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया तो छोटा-सा अंकुर बरगद का पेड़ बन जाता है। अगर जरूरत पड़े तो कम्पनी का नाम बदल दो। कुछ भी करो लेकिन यह विरोध जो पैदा हुआ है इसकी जड़ खोदकर उसमें मट्ठा डाल दो।"[4] पूंजीपति तथा सत्ताधारी व्यक्ति अपनी सत्ता तथा शासन का डोलना कभी बर्दाशत नहीं कर पाता। असल में सत्ता का बुनियादी कार्य ही जनता का शोषण करना है। सत्ताधारी व्यक्ति किसी भी तरह का विरोध सहन करने की क्षमता नहीं रखता। जनता के भीतर बढ़ते विद्रोह तथा असन्तोष के कारण वह भयभीत होने लगता है। उसे अपने चारों ओर क्रांति का धुंआ दिखाई देने लगता है। नाटक में 'पिन' एक ओर पूंजीवादी व्यवस्था की शक्ति बन कर उभरी है और दूसरी ओर यही 'पिन' शोषित वर्ग के असन्तोष तथा क्रांति के स्वर देने का कार्य भी करती है। जिसके कारण पूंजीपति व्यक्ति तिलमिला उठता है डैडी अपनी बिटिया से कहता है - "मैं कहता हूँ यह मेरे खिलाफ क्रांति है। यह सब साजिश है। इस धुएं को देखकर लगने वाली आग का अन्दाजा लगा लेना चाहिए कि अठारह सौ सत्तावन की क्रांति भी मंगल पांडे की जरा सी बात से शुरू हुई थी। मुझे वही सब होता दिख रहा है। तब भरवां कारतूस कारण था। अब भरवां करेला कारण है।"[5]

इस प्रकार क्रांति भड़काने के लिए विद्रोह की एक छोटी सी चिंगारी भी काफी होती है इसलिए घर का बावर्ची डैडी को भरवां करेले में पिन खिलाकर अपना विद्रोह जताना चाहता है। पूंजीपति अपने खिलाफ विद्रोह की छोटी सी चिंगारी से भी बौखला उठता है। यह सत्तधारी व्यक्ति है उसने अपने नौकरों पर बहुत जुल्म किए हैं लेकिन अब नौकरों ने उसके खिलाफ विद्रोह की जंग छेड़ दी है। नाटककार बताना चाहता है कि आज का शोषित वर्ग अपना हक लेना अच्छी तरह जानता है और उसने संगठित होकर शोषकों के विरुद्ध क्रांति का आह्वाहन कर दिया है। पूंजीपति चाहे कितना भी शक्तिशाली तथा ताकतवर क्यों न हो, वह जनता के सामूहिक आक्रोश के आगे टिक नहीं सकता। जिस प्रकार सन् 1857 की क्रांति में क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों को भगाने के लिए कमर कस ली थी उसी तरह पिनकुशन नाटक में पूंजीपति डैडी के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए घर के सभी कर्मचारियों ने कमर कस ली है। नाटक में शोफर क्रांति का आह्वाहन करते हुए कहता है - "आज मैं भगतसिंह हो गया हूँ और इस कोठी में काम करने वाली जमादारिनी, धोबिन और आया एक-एक लक्ष्मीबाई है। दोस्तो, एक हो जाओ और इन अलपिनों की चूलें हिला दो। आज हमारा नारा होगा कि हम डैडी की तानाशाही नहीं सहेंगे।"[6] वर्तमान भारतीय जनमानस अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो चुका है और उसने पूंजीपतियों के अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह कर उनकी सत्ता हिला डाली है अब वे तानाशाही व्यवस्था को ओर अधिक नहीं सह सकते। जन-शक्ति के समक्ष भ्रष्टाचारी, अराजक तत्त्व अधिक देर तक नहीं टिक सकते। विरोधों से घिरी निरंकुश व्यवस्था का प्रतिनिधित्व पात्र डैडी स्वयं को असमर्थ तथा असहाय पाता है - "हर तरफ अलपिन। हर तरफ अलपिन। तुम देखोगी किसी दिन ये अलपिनें मेरा घिराव कर देंगी। मैं कैद हो जाऊंगा इनके बीच। इन अलपिनों की एक शरशैया बनाई जायेगी और मुझे उस पर लिटा दिया जाएगा।"[7]

डैडी जो अपनी तानाशाही तथा अत्याचारों से सभी कर्मचारियों को त्रस्त किए हुए है जनता के सामूहिक विद्रोह को देखकर व्याकुल होकर 'पिनकुशन' बनने के लिए विवष हो रहा है। उसके आतंक और शोषण की शिकार जनता ने इस कुशन में विद्रोह की पिनें ठूंस दी है -"तो मुझे अलपिने निगल लेनी चाहिए, मुझे 'पिनकुशन' बन जाना चाहिए कि सारा अवाम मेरे शरीर में अलपिनें ठोंक जाये।"[8] वह चुपचाप इन्हें सहन करने के अलावा कुछ नहीं कर सकता। आखिर कब तक जनता मूक पशु की तरह पूंजीपति निरकुंश व्यवस्था के समक्ष खड़ी रहेगी, ऐसी व्यवस्था के बदलाव का समय शीघ्र आयेगा। इसी बदलाव के प्रति बिटिया तानाशाह डैडी को विरोध के लिए सचेते करती है - "बात यह है डैडी, आप बरसों से एक छत्र राज करते आये हैं और अपने जूतों और हंटरों से तानाशाही फैला रखी थी। अब जमाना बदल गया है।"[9] बदलाव के प्रति अनभिज्ञ डैडी पागलपन का शिकार हो जाता है - "मेरे लिए आराम हराम है। इस समय मेरा सिर फट रहा है। किसी दिन मैं ऐसे ही चीखते हुए जमीन पर गिर जाऊंगा और तुम लोगों को मालूम होगा कि, मालूम होगा कि तब मालूम होगा तुम लोगों को, तब तक लोगों को मालूम ही नहीं होगा ... तब तक तुम लोग ...।"[10] अभी तक जो व्यक्ति सबको आतंकित किए हुए था, एक विरोध मात्र से मानसिक सन्तुलन खो बैठता है क्योंकि कोई भी तानाशाह अपने विरोध की कल्पना नहीं करता, वह विरोध की भाषा से काँप उठता है, उसमें इस विद्रोह को सहन करने का साहस बिल्कुल नहीं रहता जिस कारण वह अपने प्राणों से हाथ धो बैठता है। रमेश बख्शी ने नाटक में इस तानाशाही व्यवस्था की अत्याचारी, दमन तथा शोषणकारी नीतियों के विरुद्ध सामूहिक विद्रोह के द्वारा ही परिवर्तन की अलख जगाने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. रमेश बख्शी, पिनकुशन, नेमिचन्द्र जैन (सम्पादक),नये हिन्दी लघु नाटक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृ. 151
2. वही, पृ. 154
3. वही, पृ. 159
4. वही, पृ. 151
5. वही, पृ. 157
6. वही, पृ. 159
7. वही, पृ. 158
8. वही, पृ. 158
9. वही, पृ. 158
10. वही, पृ. 158